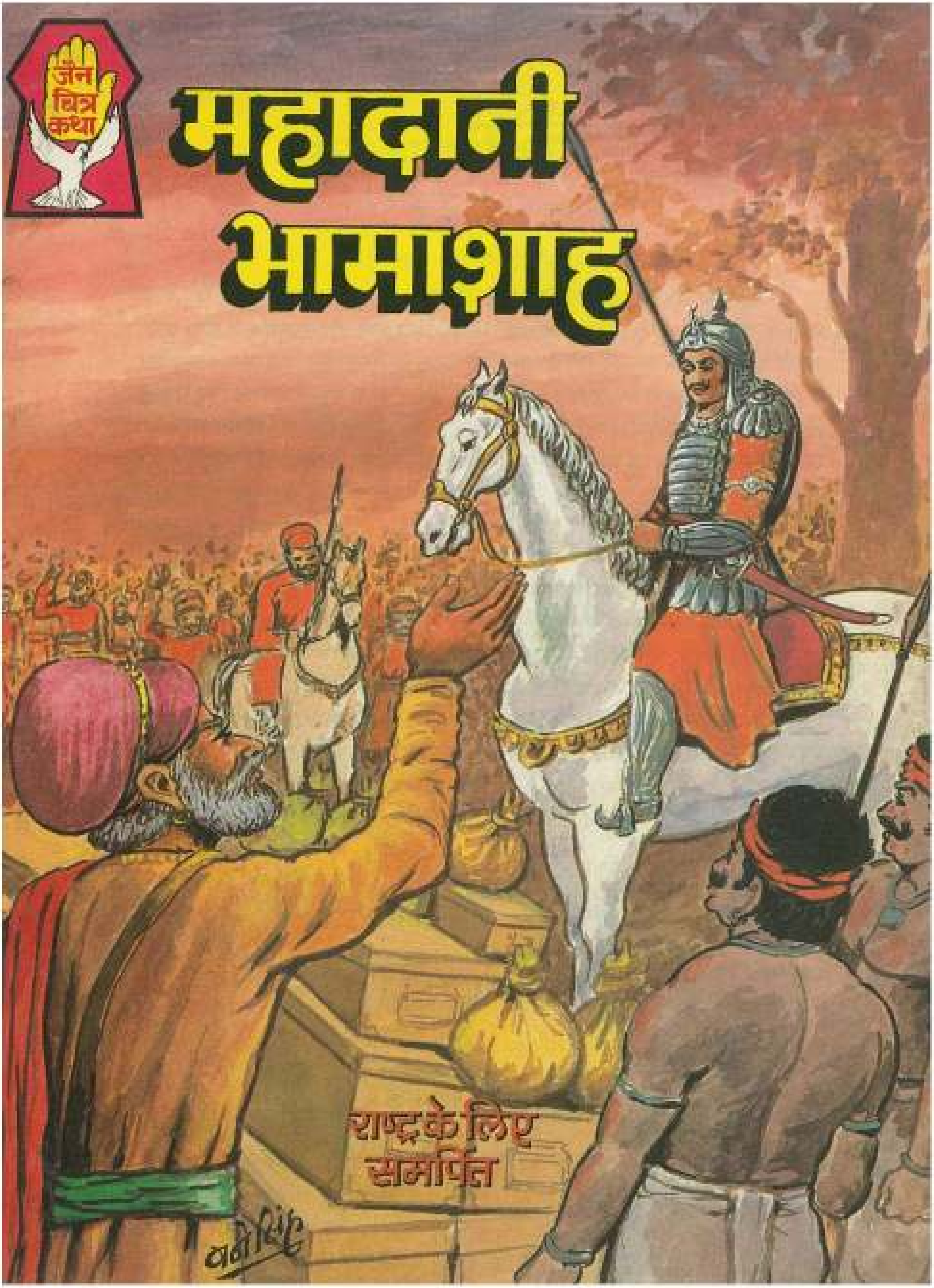
जैन चित्र कथा
महादानी भामाशाह
राष्ट्र के लिए समर्पित

सम्पादकीय

भामाशाह राणा उदयसिंह के समय से ही राज्य का दीवान एवं प्रधानमंत्री था। हल्दी घाटी के युद्ध (१५७६ ई.) में पराजित हो कर स्वतंत्रता प्रेमी और स्वाभिमानी राणा प्रताप जंगलों और पहाड़ों में भटकने लगे थे। मुगल सेना ने उन्हें चैन न लेने दिया अतएव सब ओर से निराश और हताश हो कर उन्होंने स्वदेश का परित्याग करके अन्यत्र चले जाने का संकल्प किया। इस बीच स्वदेशभक्त एवं स्वामीभक्त भामाशाह चुप नहीं बैठा था। ठीक जिस समय राणा भरे मन से मेवाड़ की सीमा से विदाई ले रहा था भामाशाह आ पहुंचा और मार्ग रोक कर खड़ा हो गया। भामाशाह ने देशोद्धार के प्रयत्न के लिए उत्साहित किया। राणा ने कहा मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं और न ही सैनिक एवं साथी, किस प्रकार यह प्रयत्न करूं। भामाशाह ने तुरन्त विपुल धन उनके चरणों में समर्पित कर दिया। इतना धन दिया कि जिससे २५ हजार सैनिकों का बारह वर्षों तक निर्वाह हो सकता था। इस अप्रतिम उदारता एवं अप्रत्याशित सहायता पर राणा ने हर्ष विभोर हो कर भामा शाह को आलिंगनबद्ध कर लिया। राणा ने पुन: सैनिकों को जुटाकर मुगलों को देश से बाहर करने में जुट गये तथा पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र किया। भामाशाह की उदारता एवं वीरता को देखकर राणा जी ने दानवीर शिरोमणी भामाशाह का बड़ा सम्मान किया। अपनी इस अपूर्व एवं उदार सहायता के कारण भामाशाह मेवाड़ का उद्धारकर्त्ता कहलाये। यह कृति भी देश के रक्षक दानवीर भामाशाह को समर्पित।

धर्मचंद शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य

सम्पादक : धर्मचंद शास्त्री
लेखक : प्रेम किशोर पटाखा
चित्रकार : बने सिंह
प्रकाशक : आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थमाला
प्राप्ति स्थान : जैन मन्दिर, गुलाब वाटिका, लोनी रोड (उ.प्र.)

वर्ष ३ अंक २१ मूल्य ६/- सन् १९९१

जैन चित्र कथाओं के प्रकाशन के इस पावन पुनीत महायज्ञ में संस्था को सहयोग प्रदान करें।

परम संरक्षक : ११११११ संरक्षक : ५००१ आजीवन : १५०१

महादानी भामाशाह
रेखांकन - कर्मसिंह
हल्दीघाटी का युद्ध हो चुका था, इसमें राणा प्रताप का प्यारा घोड़ा चेतक शहीद हो गया, राणा को अपार धन और जन की हानि अलग से उठानी पड़ी, मगर राणा ने हार नहीं मानी, फिर से युद्ध की तैयारी शुरू कर दी, मेवाड़ के महामंत्री, कोषाध्यक्ष भामाशाह पड़ोसी राज्यों से मिलने के लिए निकल पड़ते हैं —

भामाशाह, सिरोही के राव सुरतान से मिलने के बाद अगले दिन जालोर के सुलतान ताज खाँ के यहां शाही मेहमान बने ....
आपको अपने बीच में पाकर सचमुच हमारी धरती धन्य हो गई।
यह आपका बड़प्पन है, आप जैसे बहादुर साथियों के कारण ही स्वतंत्रता की रक्षा की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ली है।
दरबारी ने झुककर सलाम किया –
सिरोही के सुरतान आपसे मिलना चाहते हैं।
उन्हें सम्मान के साथ यहां लाया जाय–
मुझे भामाशाह के आगमन की सूचना मिल चुकी थी।
मैं आपके पुनः दर्शनों से धन्य हो गया।
हम दोनों ही तन, मन, धन से आपके साथ हैं।

यह बात मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। तभी तो आपके बीच में महाराणा का संदेश लेकर आया हूँ।
आप निश्चिंत रहें सिरोही और जालौर आपके साथ जिएंगे आपके साथ मरेंगे।
सिरोही तो आप एक दिन ही रूक पाए।
मेरी मजबूरी है, सुल्तान!
तो क्या आप यहां भी ज्यादा दिन नहीं रूकेंगे।
नहीं, बस अपना संदेश देकर शीघ्र ही लौटना पड़ेगा
आपकी इस यात्रा से एक विचार और मन में आया था?
वो क्या?
यही कि आप आबू के निकट देलवाड़ा में विशाल मंदिर बनवा रहे हैं।
उसके लिए धन संग्रह हेतु निकले हैं?
हां,मैंने यही समझा
नहीं, देलवा का मंदिर किसी दूसरे के धन से नहीं, अपने ही धन से पूरा करूंगा।
मंदिर के निर्माण में कितना धन व्यय होने का अनुमान है।

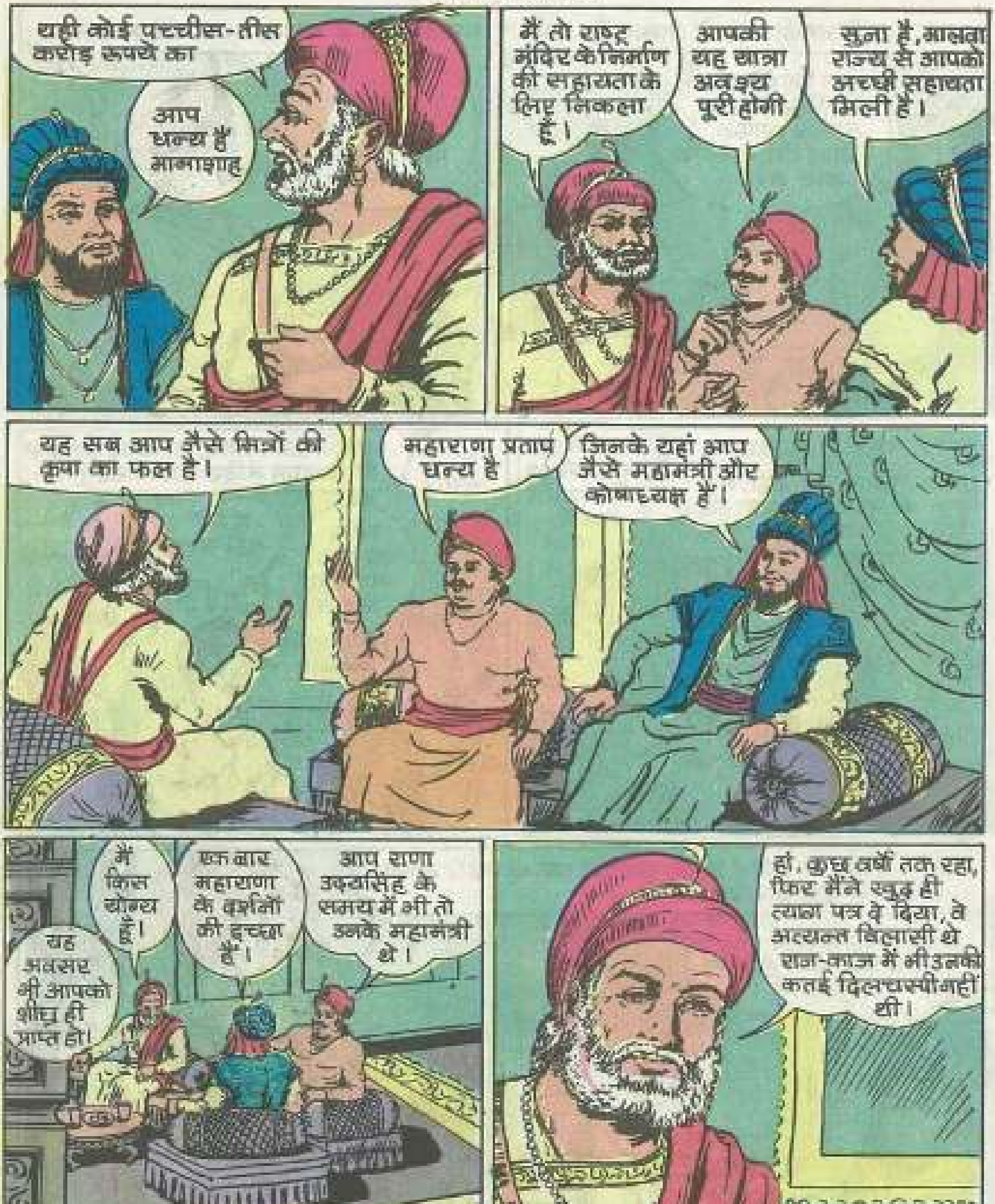
यही कोई पच्चीस-तीस करोड़ रूपये का
आप धन्य हैं भामाशाह
मैं तो राष्ट्र मंदिर के निर्माण की सहायता के लिए निकला हूं।
आपकी यह यात्रा अवश्य पूरी होगी
सुना है, मालवा राज्य से आपको अच्छी सहायता मिली है।
यह सब आप जैसे मित्रों की कृपा का फल है।
महाराणा प्रताप धन्य है
जिनके यहां आप जैसे महामंत्री और कोषाध्यक्ष हैं।
मैं किस योग्य हूं।
यह अवसर भी आपको शीघ्र ही प्राप्त हो।
एक बार महाराणा के दर्शनों की इच्छा है।
आप राणा उदयसिंह के समय में भी तो उनके महामंत्री थे।
हां, कुछ वर्षों तक रहा, फिर मैंने खुद ही त्याग पत्र दे दिया, वे अत्यन्त विलासी थे राज-काज में भी उनकी कतई दिलचस्पी नहीं थी।

महाराणा से कहिए हम सदैव आपके साथ हैं।
यदि आज बुरे दिन देखने पड़ रहे हैं तो कल अच्छे दिन भी आयेंगे
स्वतंत्रता के दीवानों को अच्छे-बुरे दिनों का कोई महत्व नहीं होता, और यह आजादी हम लेकर रहेंगे।
सुना है हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा ने अपना सर्वस्व खो दिया
प्यारा घोड़ा चेतक भी उनके साथ नहीं रहा
चेतक के खो जाने पर राणा भाव विह्वल हो उठते हैं, और कहते हैं, शाह जी मैंने अपना प्यारा चेतक खोकर शक्तिसिंह जैसा महाबली भाई को प्राप्त किया है। राणा प्रताप के पास शीघ्र पहुंचना है।
सूचना मिली है कि मुगल सल्तनत अपनी विशाल शक्ति से महाराणा प्रताप को झुकाना चाहती है।
मगर प्रताप ने झुकना नहीं सीखा, प्रताप टूट सकते हैं, झुक नहीं सकते।
इसी बीच राज्य के वजीर ने संदेश दिया-
जहाँपनाह, महाराणा प्रताप को भेजे जाने वाला उपहार तैयार है।
चलिए हम खुद चलकर देखते हैं।
चलिए!

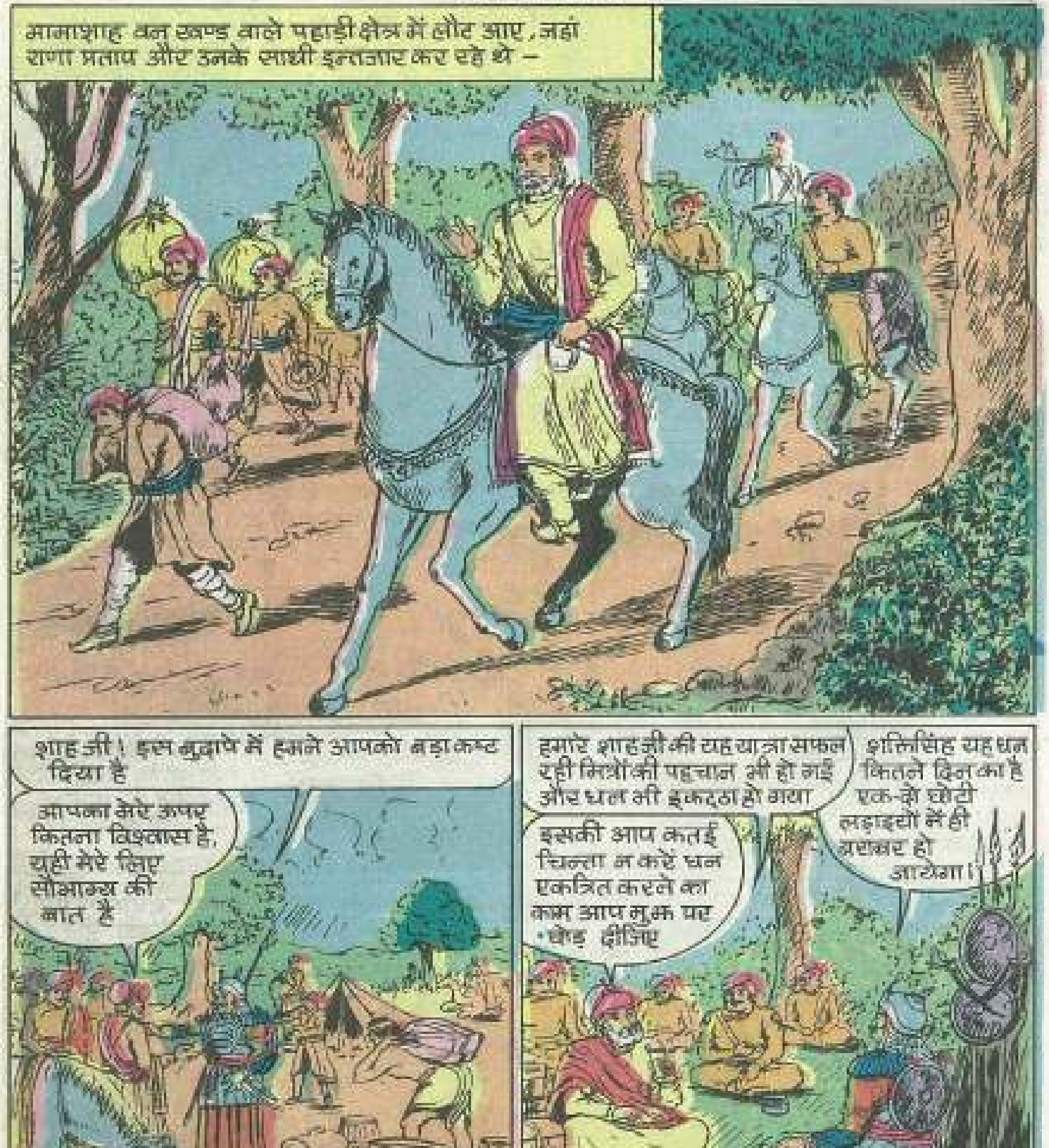
भामाशाह वन खण्ड वाले पहाड़ी क्षेत्र में लौट आए, जहां राणा प्रताप और उनके साथी इन्तजार कर रहे थे –
शाह जी! इस बुढ़ापे में हमने आपको बड़ा कष्ट दिया है
आपका मेरे ऊपर कितना विश्वास है, यही मेरे लिए सौभाग्य की बात है
हमारे शाहजी की यह यात्रा सफल रही मित्रों की पहचान भी हो गई और धन भी इकट्ठा हो गया
शक्तिसिंह यह धन कितने दिन का है एक-दो छोटी लड़ाइयों में ही खत्म हो जायेगा।
इसकी आप कतई चिन्ता न करें धन एकत्रित करने का काम आप मुझ पर छोड़ दीजिए

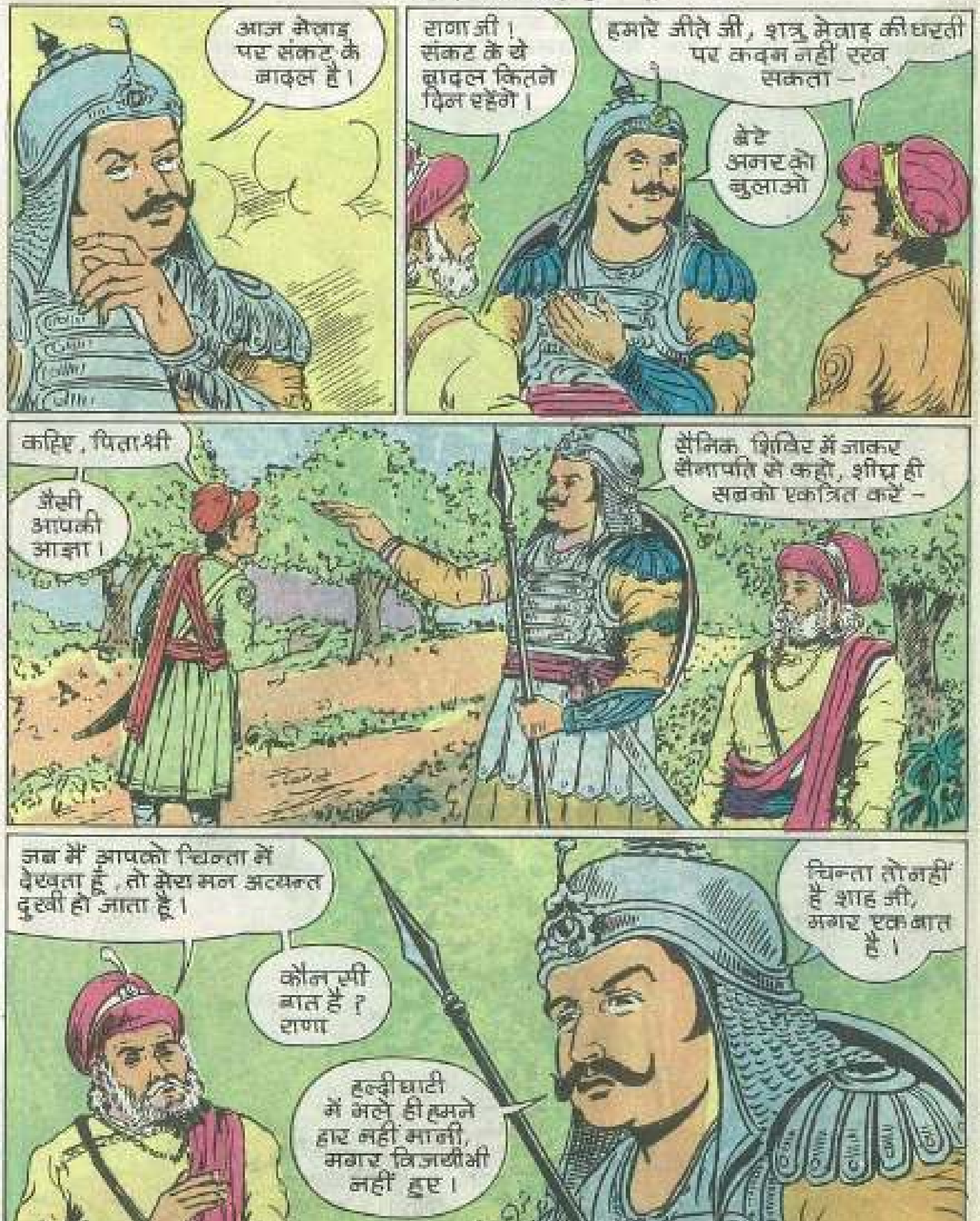
आज मेवाड़ पर संकट के बादल हैं।
राणा जी! संकट के ये बादल कितने दिन रहेंगे।
हमारे जीते जी, शत्रु मेवाड़ की धरती पर कदम नहीं रख सकता —
मेरे अमर को बुलाओ
कहिए, पिताश्री
जैसी आपकी आज्ञा।
सैनिक शिविर में जाकर सेनापति से कहो, शीघ्र ही सबको एकत्रित करें —
जब मैं आपको चिन्ता में देखता हूँ, तो मेरा मन अत्यन्त दुखी हो जाता है।
चिन्ता तो नहीं है शाह जी, मगर एक बात है।
कौन सी बात है? राणा
हल्दीघाटी में भले ही हमने हार नहीं मानी, मगर विजयी भी नहीं हुए।

तो इसलिए राणा, कि शत्रु सैना हमसे कई गुना अधिक है
यह कोई मुख्य कारण नहीं है। हमारे सैनिक उनसे कई गुना अधिक वीर और साहसी हैं।
शत्रु के पास आधुनिक हथियार हैं तोपें हैं, बन्दूकें हैं, और हमारे पास सिर्फ तलवारें, भाले और बरछियां —
आइये, भीलराज, क्या बात है ?
संकेत मिला है कि शत्रु जबरदस्त तैयारी के साथ हमला करने वाला है।

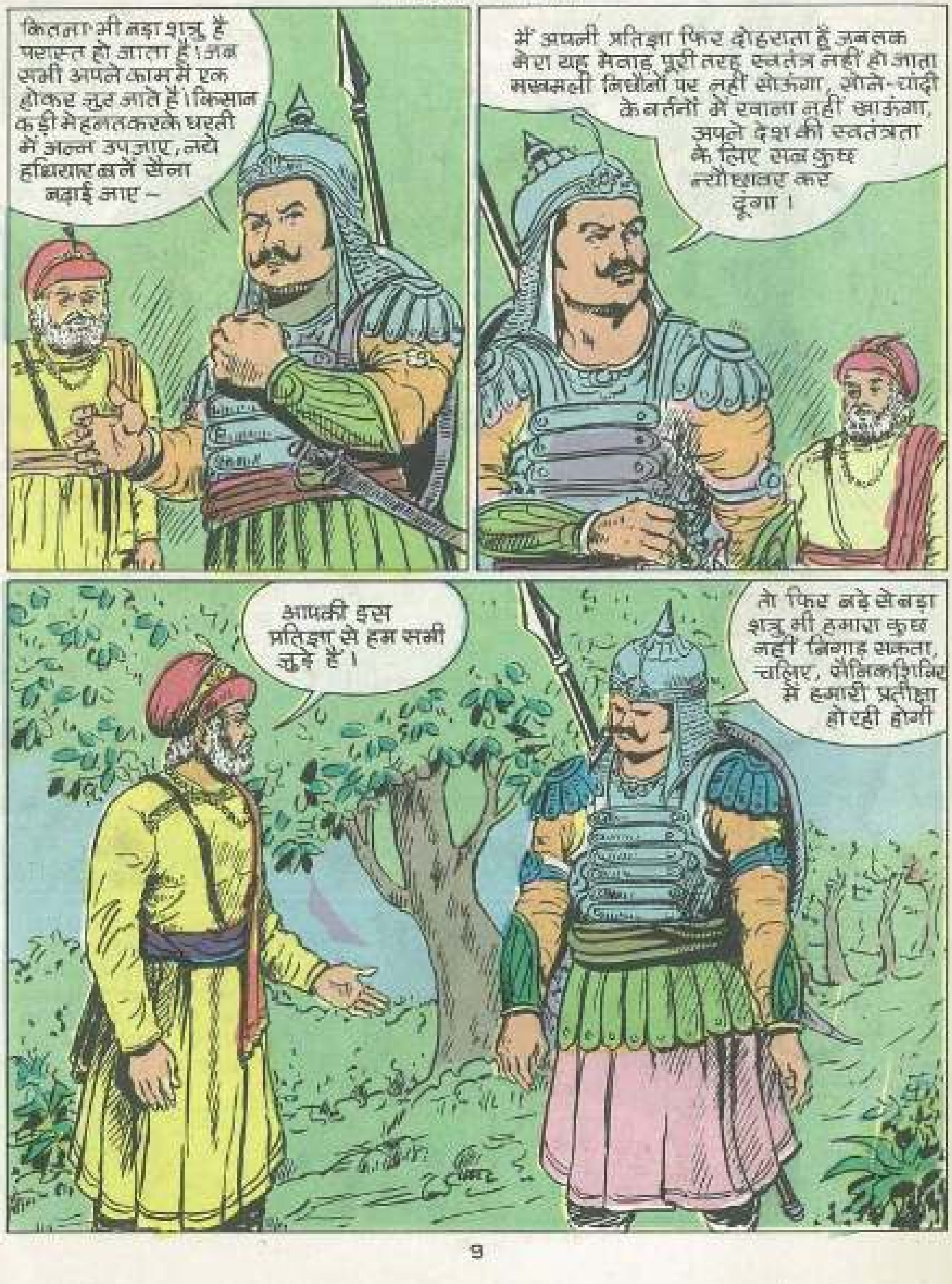
कितना भी बड़ा शत्रु है पराजित हो जाता है। जब सभी अपने काम में एक होकर जुट जाते हैं। किसान कड़ी मेहनत करके धरती में अन्न उपजाए, नये हथियार बनें सेना बढ़ाई जाए –
मैं अपनी प्रतिज्ञा फिर दोहराता हूं जबतक मेरा यह मेवाड़ पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो जाता मखमली बिछौनों पर नहीं सोऊंगा, सोने-चांदी के बर्तनों में खाना नहीं खाऊंगा, अपने देश की स्वतंत्रता के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दूंगा।
आपकी इस प्रतिज्ञा से हम सभी जुड़े हैं।
तो फिर बड़े से बड़ा शत्रु भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, चलिए, सैनिकशिविर में हमारी प्रतीक्षा हो रही होगी

राणा प्रताप के वे दिन-
बेटा अमरसिंह, एक रोटी और खा ले।
कैसी बातें करता है, कहीं एक रोटी से किसी की भूख मिटती है
नहीं मां, भूख नहीं है।
मैं अपने हिस्से की एक रोटी खा चुका हूं मां
मैं तुझे अपने हिस्से की रोटी देती हूं।
अगर मैं किसी दूसरे के हिस्से की रोटी खाऊंगा तो वह भूखा रह जाएगा
नहीं मां, यह सरासर अन्याय है।
मैं तो कई दिनों तक बिना रोटी के भी रह सकती हूं, बेटे।
हमारे दुर्भाग्य! ये दिन भी हमें देखने को मिल गये। राजमहलों में पलने वाले आज साग-पातकी, भर पेट रोटी भी नहीं खा पा रहे। एक रोटी के लिए तरस रहे हैं।
तुम्हारे मुख से ये बातें शोभा नहीं देतीं हैं, मां।

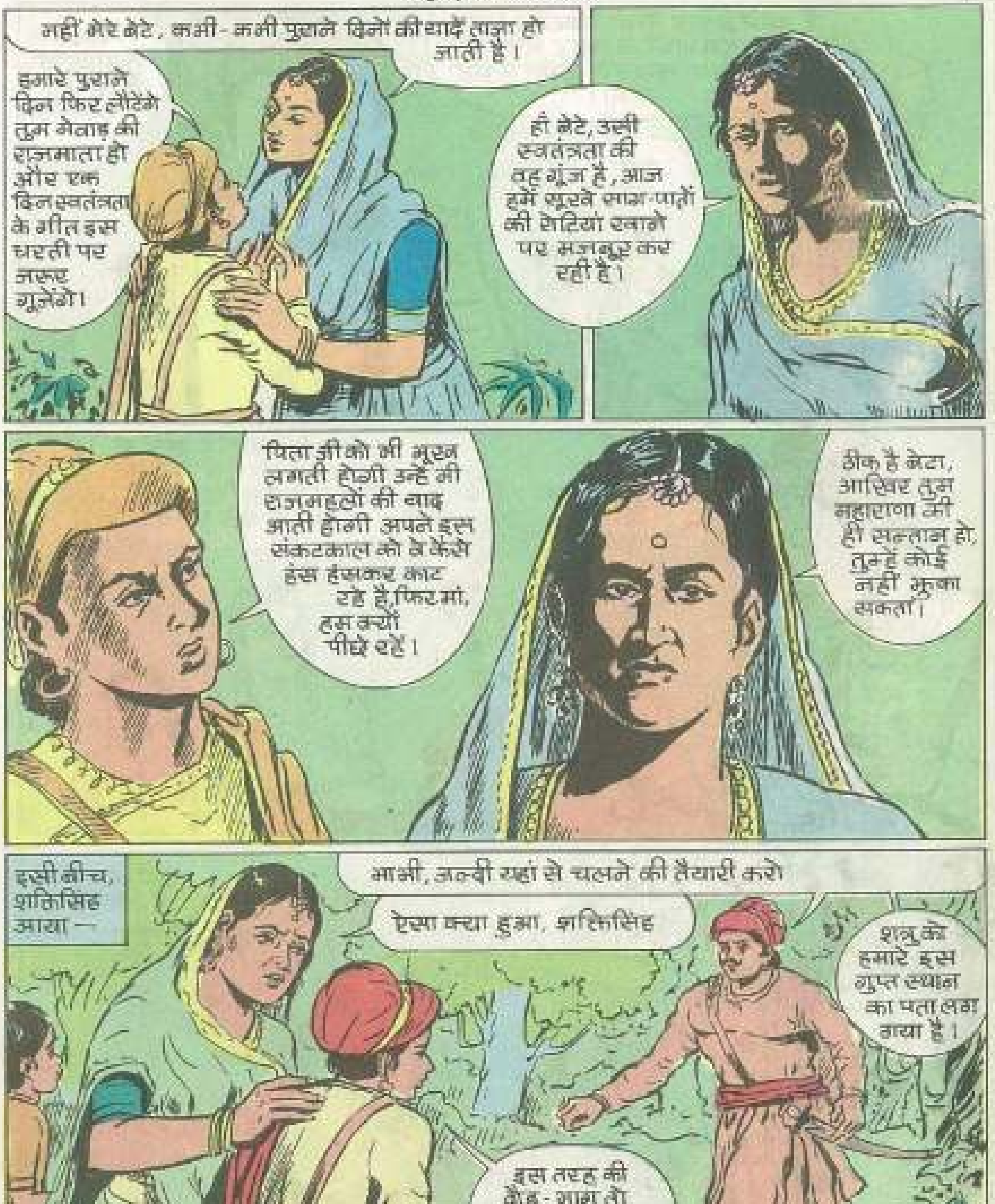
नहीं मेरे बेटे, कभी-कभी पुराने दिनों की यादें ताज़ा हो जाती हैं।
हमारे पुराने दिन फिर लौटेंगे तुम मेवाड़ की राजमाता हो और एक दिन स्वतंत्रता के गीत इस धरती पर जरूर गूंजेंगे।
हाँ बेटे, उसी स्वतंत्रता की वह गूंज है, आज हमें सूखे साग-पातों की रोटियां खाने पर मजबूर कर रही है।
पिता जी को भी भूख लगती होगी उन्हें भी राजमहलों की याद आती होगी अपने इस संकटकाल को वे कैसे हंस हंसकर काट रहे हैं फिर मां, हम क्यों पीछे रहें।
ठीक है बेटा, आखिर तुम महाराणा की ही सन्तान हो, तुम्हें कोई नहीं झुका सकता।
इसी बीच, शक्तिसिंह आया —
भाभी, जल्दी यहां से चलने की तैयारी करो।
ऐसा क्या हुआ, शक्तिसिंह
शत्रु को हमारे इस गुप्त स्थान का पता लग गया है।
इस तरह की दौड़-भाग तो अपना जीवन है।

हमने अपना मोर्चा तैयार कर लिया है। तुम भाभी को लेकर भीलराज के साथ छप्पन के जंगल में चले जाओ।
ऐसा क्यों?
मैं माँ के साथ जंगल में छिपने नहीं जाऊंगा
मैं भी आपके साथ यहीं युद्ध करूंगा
यह कैसे हो सकता है राणा जी की आज्ञा है कि तुम परिवार की रक्षा के लिए छप्पन के जंगल में चले जाओ।
मैं अभी इस बारे में पिताजी से बात करूंगा 'क्या मैं हल्दीघाटी के युद्ध में ठीक से नहीं लड़ा था"
ऐसी बात नहीं है, अगर

तो फिर क्या बात है, मैं अब बालक नहीं रहा।
ठीक है भैया, आप अमरको अपने साथ ही रखें हमारी कोई चिन्ता न करें।
ठीक है भाभी मैं अमर को अपने साथ रखता हूं।
वाह काका, तुम कितने अच्छे हो जो मेरी बात इतनी जल्दी मान ली।
मगर एक शर्त है।
कौनसी शर्त
यही कि मैं इस बार युद्ध का सेनापति हूं और सेनापति की आज्ञा मानना हर सैनिक का कर्त्तव्य होता है
आपकी हर बात मानने के लिए मैं तैयार हूं।

पहले भाभी को भीलराज के साथ सुरक्षित छप्पन जंगल में पहुंचा-कर आओ, उसके बाद भीलराज के साथ यहाँ वापिस लौटकर आ जाओ
जैसी सेनापति की आज्ञा, चलो माँ
घमासान युद्ध हुआ —
जय मेवाड़
राणा की जय हो
हर हर हर महादेव
लड़ते हुए जयघोष के आगे शत्रुदल के पैर उखड़ गये
उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा

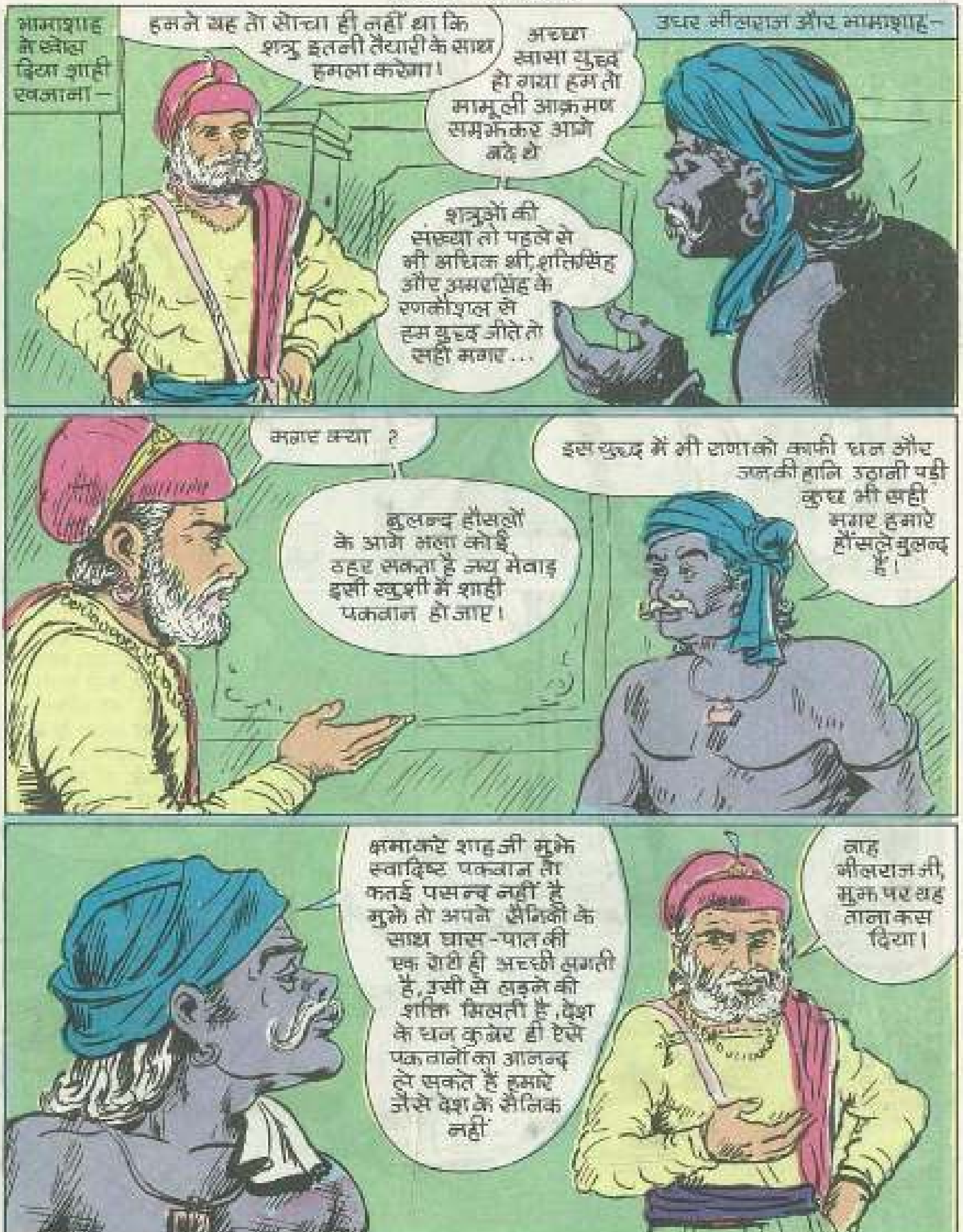
भामाशाह ने खोल दिया शाही खजाना –
हमने यह तो सोचा ही नहीं था कि शत्रु इतनी तैयारी के साथ हमला करेगा।
उधर भीलराज और भामाशाह –
अच्छा खासा युद्ध हो गया हम तो मामूली आक्रमण समझकर आगे बढ़े थे
शत्रुओं की संख्या तो पहले से भी अधिक थी, शक्तिसिंह और अमरसिंह के रणकौशल से हम युद्ध जीते तो सही मगर …
मगर क्या ?
इस युद्ध में भी राणा को काफी धन और जन की हानि उठानी पड़ी कुछ भी नहीं मगर हमारे हौसले बुलन्द हैं।
बुलन्द हौसलों के आगे भला कोई ठहर सकता है जय मेवाड़ इसी खुशी में शाही पकवान हो जाए।
क्षमा करें शाह जी मुझे स्वादिष्ट पकवान तो कतई पसन्द नहीं है मुझे तो अपने सैनिकों के साथ घास-पात की एक रोटी ही अच्छी लगती है, उसी से लड़ने की शक्ति मिलती है, देश के धन कुबेर ही ऐसे पकवानों का आनन्द ले सकते हैं हमारे जैसे देश के सैनिक नहीं
वाह भीलराज जी, मुझ पर यह ताना कस दिया।

नहीं शाह जी, मेरी ऐसी औकात कहाँ, अच्छा अब चलता हूँ, प्रणाम।
राणा के पास तो मुझे भी चलना है मगर पहले जरा लक्ष्मी-माता की पूजा करलूं।
हे लक्ष्मी माता, मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि सदैव ही बनाये रखना, जिस पर तेरी कृपा रहती है वह धन-कुबेर हो जाता है तू मुझे अपार धन प्रदान कर ताकि मैं उसका उपयोग राष्ट्रहित में कर सकूं

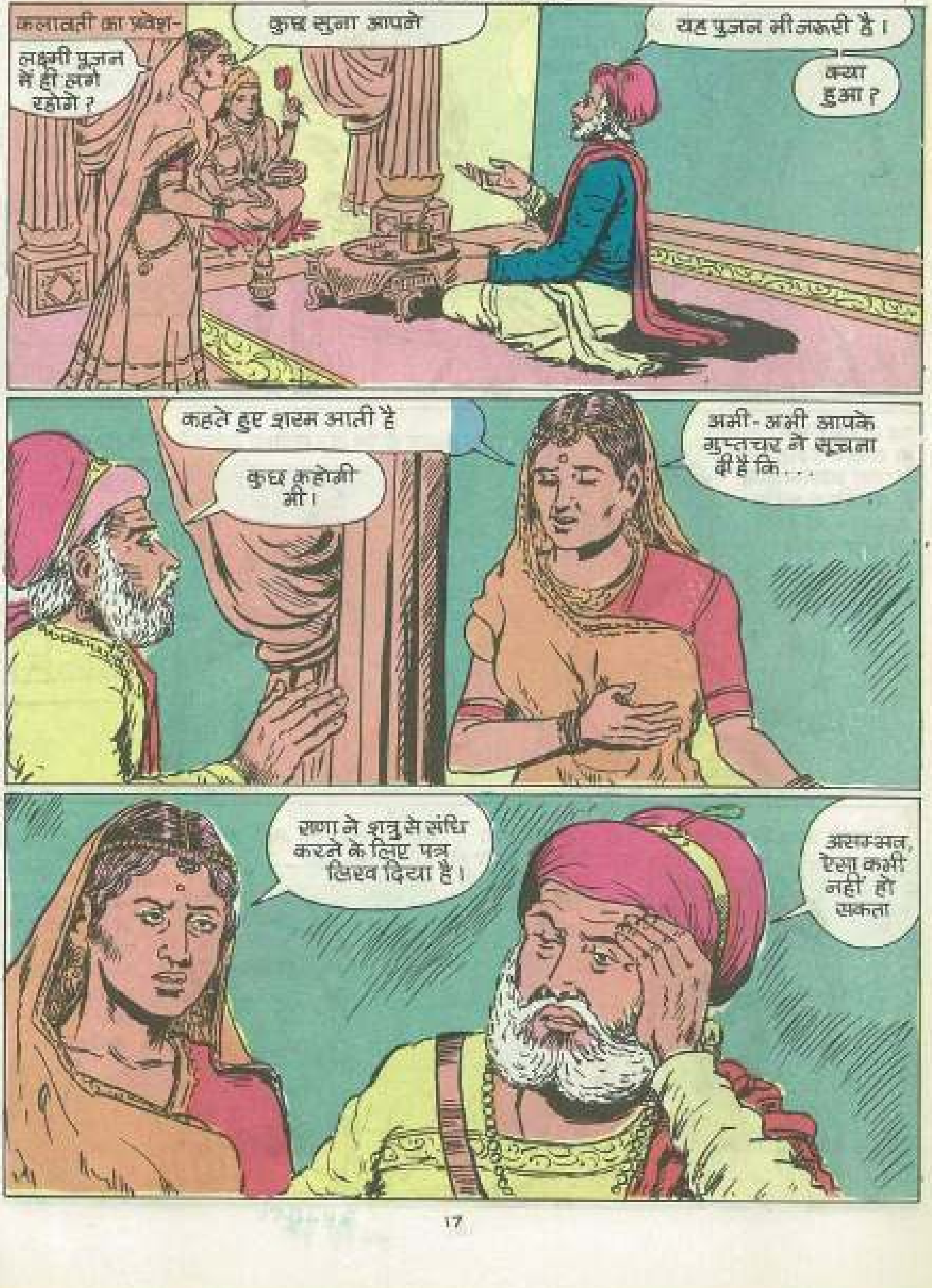
कलावती का प्रवेश-
लक्ष्मी पूजन में ही लगे रहोगे ?
कुछ सुना आपने
यह पूजन भी जरूरी है।
क्या हुआ ?
कहते हुए शरम आती है
कुछ कहोगी भी।
अभी-अभी आपके गुप्तचर ने सूचना दी है कि . . .
राणा ने शत्रु से संधि करने के लिए पत्र लिख दिया है।
असम्भव, ऐसा कभी नहीं हो सकता

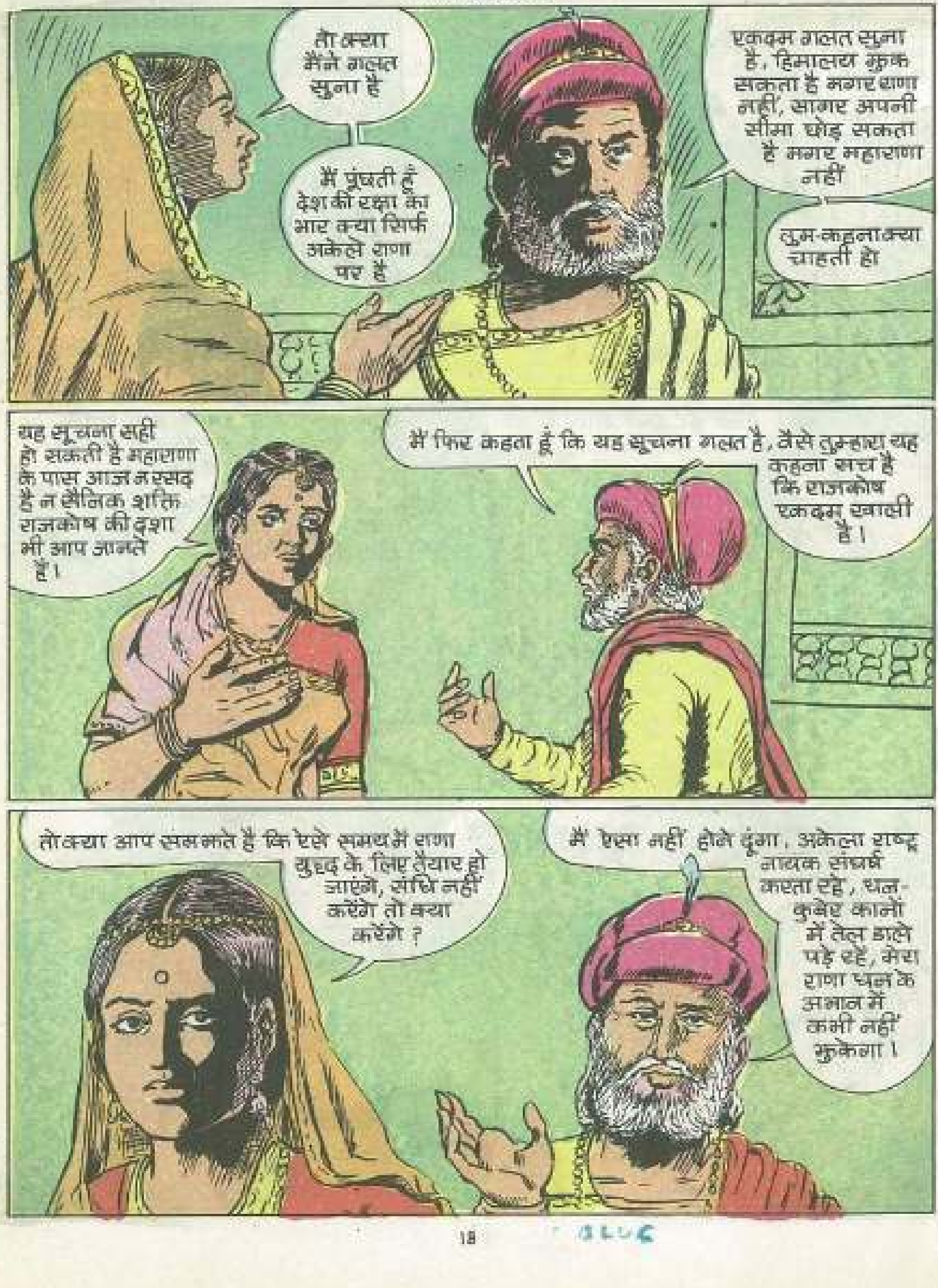
तो क्या मैंने गलत सुना है
मैं पूछती हूँ देश की रक्षा का भार क्या सिर्फ अकेले राणा पर है
एकदम गलत सुना है, हिमालय झुक सकता है मगर राणा नहीं, सागर अपनी सीमा छोड़ सकता है मगर महाराणा नहीं
तुम कहना क्या चाहती हो
यह सूचना सही हो सकती है महाराणा के पास आज न रसद है न सैनिक शक्ति राजकोष की दशा भी आप जानते हैं।
मैं फिर कहता हूं कि यह सूचना गलत है, वैसे तुम्हारा यह कहना सच है कि राजकोष एकदम खाली है।
तो क्या आप समझते हैं कि ऐसे समय में राणा युद्ध के लिए तैयार हो जाएंगे, संधि नहीं करेंगे तो क्या करेंगे ?
मैं ऐसा नहीं होने दूंगा, अकेला राष्ट्र नायक संघर्ष करता रहे, धन-कुबेर कानों में तेल डाले पड़े रहें, मेरा राणा धन के अभाव में कभी नहीं झुकेगा।

तभी द्वारपाल अंदर हाजिर हुआ–
कहो द्वारपाल कैसे आना हुआ?
शक्तिसिंह आपसे मिलना चाहते हैं
अन्दर आजाओ शक्तिसिंह
तुम्हें द्वारपाल भेजने की क्या जरूरत थी सीधे अन्दर आजाते
कहो क्या बात है?
राणा ने आपको याद किया है
मैंने जो सुना है क्या वो सही है
मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता
आखिर क्यों?
राणा ने इस विषय में किसी से कुछ नहीं कहा, पिछले दो दिनों से काफी परेशान लगते हैं इसलिए मैं आपके पास आया हूं।
इसके लिए अब उन्हें परेशान नहीं होना पड़ेगा शक्तिसिंह सामने तिजोरी खुली पड़ी है...

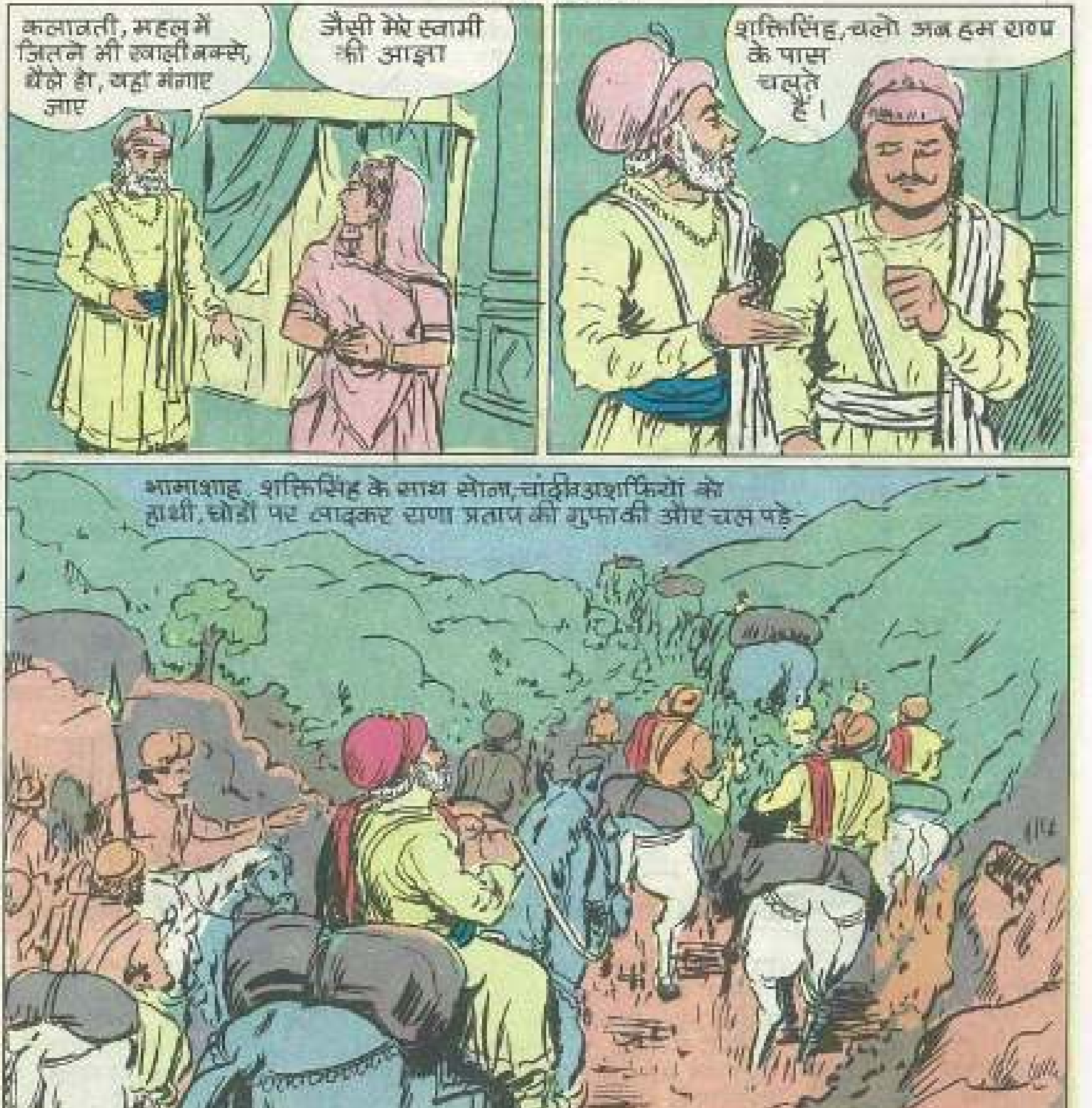
कलावती, महल में जितने भी खाली बक्से, थैले हैं, यहां मंगाए जाए
जैसी मेरे स्वामी की आज्ञा
शक्तिसिंह, चलो अब हम राणा के पास चलते हैं।
भामाशाह, शक्तिसिंह के साथ सोना, चांदी व अशर्फियों को हाथी, घोड़ों पर लादकर राणा प्रताप की गुफा की ओर चल पड़े-

राष्ट्रमन्दिर का निर्माण
महाराणा प्रताप की जय
भामाशाह की जय
महावीर स्वामी की जय
राणा जी, भामाशाह हाजिर है
आइये शाहजी, मुझे आपका ही इन्तजार था
मुझे इस बात की भनक लग चुकी है
कौनसी बात की ?
यही कि आप दुश्मन से संधि करना चाहते हैं
अब मुझसे युद्ध नहीं होगा
इसलिए की अब लड़ने के लिए राजकोष एकदम खाली हो चुका है

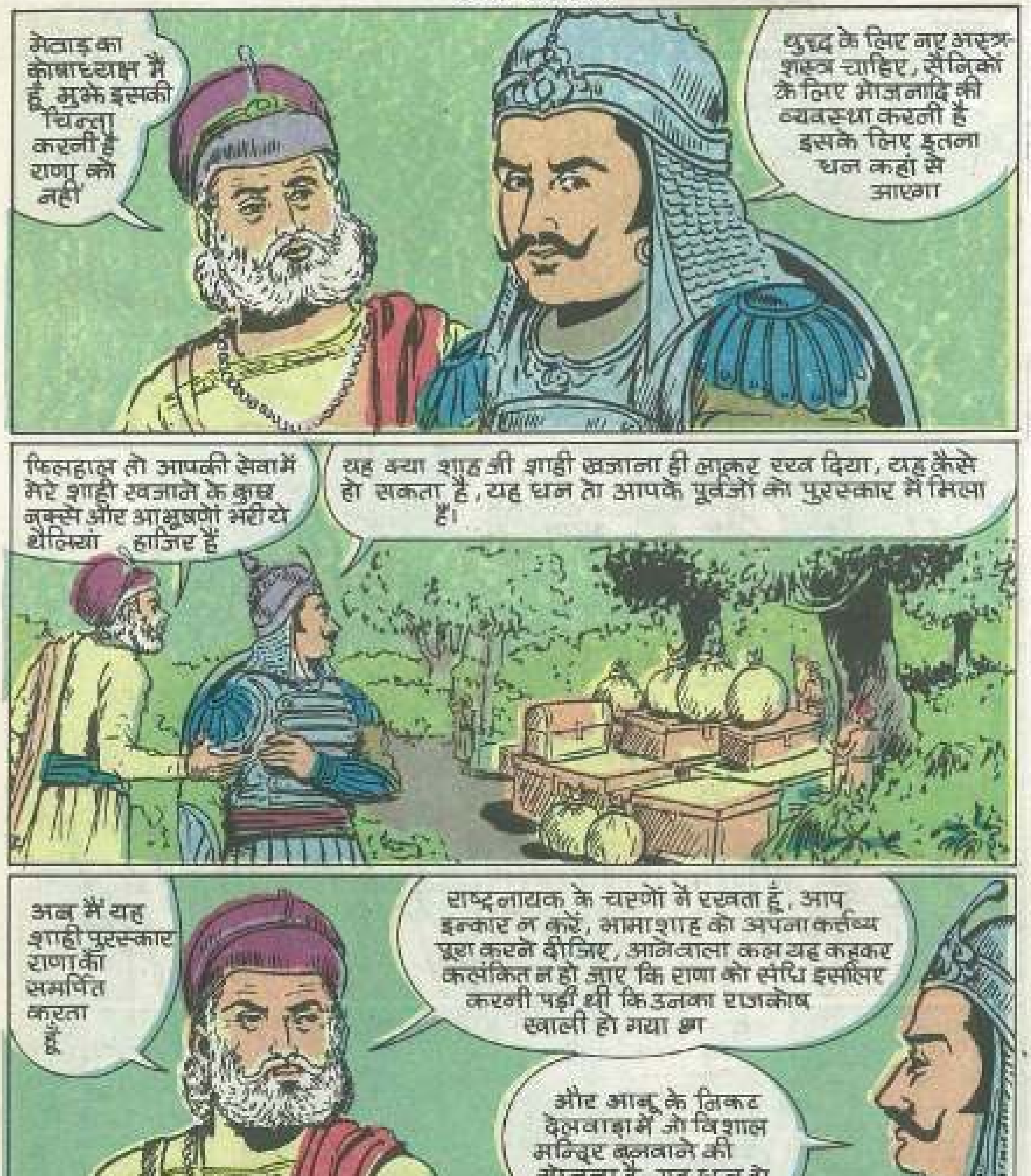
मेवाड़ का कोषाध्यक्ष मैं हूँ, मुझे इसकी चिन्ता करनी है राणा को नहीं
युद्ध के लिए नए अस्त्र-शस्त्र चाहिए, सैनिकों के लिए भोजनादि की व्यवस्था करनी है इसके लिए इतना धन कहाँ से आएगा
फिलहाल तो आपकी सेवा में मेरे शाही खजाने के कुछ बक्से और आभूषणों भरी ये थैलियां हाजिर हैं
यह क्या शाह जी शाही खजाना ही लाकर रख दिया, यह कैसे हो सकता है, यह धन तो आपके पूर्वजों को पुरस्कार में मिला है।
अब मैं यह शाही पुरस्कार राणा को समर्पित करता हूँ
राष्ट्रनायक के चरणों में रखता हूँ, आप इन्कार न करें, भामाशाह को अपना कर्तव्य पूरा करने दीजिए, आनेवाला कल यह कहकर कलंकित न हो जाए कि राणा को संधि इसलिए करनी पड़ी थी कि उनका राजकोष खाली हो गया था
और आबू के निकट देलवाड़ा में जो विशाल मन्दिर बनवाने की योजना है, यह धन तो उसके लिए है।

राणा जी, देव मन्दिर से बड़ा होता है राष्ट्र मन्दिर का निर्माण, राष्ट्रमन्दिर ही यदि कमजोर रहा तो देव-मन्दिर की रक्षा कौन करेगा।
शाह जी, आप धन्य हो, धन्य हो आपका जैन धर्म मेवाड़ आपका सदा ऋणी रहेगा।

शाह जी, आपने प्रताप को टूटने से बचा लिया
यह मेरा कर्त्तव्य है, यदि इसके बाद भी धन की आवश्यकता हुई तो मेरे पास गुप्त खजानों के नक्शे हैं हम उन्हें भी ढूंढ निकालेंगे।

शक्तिसिंह युद्ध की तैयारियां फिर शुरू कर दी जाएं –
हम सब तैयार हैं।

युद्ध का बिगुल बज उठता है
मेवाड़ की जय
राणा प्रताप की जय
भामाशाह की जय
धन्य है भामाशाह जैन और उनका सर्वस्व दान बलिदानों की अनेक गाथाओं से जुड़ा हुआ, अपना प्यारा हिन्दुस्तान—
– समाप्त –

सुनो सुनायें सत्य कथाएँ

जैन चित्र कथा

नई पीढ़ी को अच्छी शिक्षा के लिए

हमारे नए अंक में

नया उत्साह, उमंग, ज्ञान रस से भरपूर, जीवन को प्रेरणा देने वाली रोचक एवं मनोरंजक कहानियां

रंग बिरंगी दुनियाँ में
आपके नन्हें मुन्नों के लिए ज्ञान वर्धक टोनिक
जैन चित्र कथा पढ़ें तथा पढ़ायें

अब तक प्रकाशित जैन चित्र कथाएँ।

(1) तीन दिन में
(2) भाग्य की परीक्षा
(3) त्याग और प्रतिज्ञा
(4) आटे का मुर्गा
(5) करे सो भरे
(6) कविरत्नाकर
(7) चमत्कार
(8) प्रद्युम्न हरण
(9) सत्य घोस
(10) सात कौड़ियों में राज्य
(11) टीले वाले बाबा
(12) चंदना
(13) ताली एक हाथ से बजती रही
(14) सिकन्दर और कल्याणमुनि
(15) चारित्र चक्रवर्ती
(16) रुप को बदला नहीं
(17) राहुल
(18) स्वर्ग की सीढ़ियाँ

आगामी प्रकाशन

(1) अंजना
(2) मुनि रक्षा
(3) गाये जा गीत अपन के
(4) क्या रखा है इसमें
(5) चरित्र ही मन्दिर है
(6) मुक्ति का राही
(7) आत्म कीर्तन
(8) महादानी भामाशाह
(9) आचार्य कुन्दकुन्द
(10) रामायण
(11) नन्हें मुन्हें
(12) एक चोर
(13) सोने की थाली
(14) नाग कुमार
(15) तीसरा नेत्र
(16) बेताल गुफा
(17) चन्द्रप्रभु तीर्थंकर
(18) जल्लाद का अहिंसाव्रत
(19) निकलंक का जीवन दान
(20) महारानी मृगावती
(21) नेमीनाथ
(22) दलदल में फंसा बैल
(23) आओं चले हस्तिनापुर
(24) सुबह का भूला
(25) ऋषि का प्रभाव

प्रकाशक : आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला
गोधा सदन
अलसीसर हाऊस संसारचंद,
रोड जयपुर

प्राप्ति स्थान : जैन चित्र कथा कार्यालय
दि. जैन मन्दिर, गुलाब वाटिका
दिल्ली सहारनपुर रोड दिल्ली (U.P.)

तो फिर देर किस बात की आज ही ड्राफ्ट या चैक जैन चित्र कथा के नाम से भेजें

परम संरक्षक ११११११ संरक्षक ५००१ आजीवन १५०१ दस वर्षीय ७०१

AF

ARVINFAB

SUITING, SHIRTING & DRESS MATERIAL

Sales off.
UTTAM SALES CORPORATION
FIRST FLOOR, KATRA LESHWAN
CHANDNI CHOWK, DELHI - 6
Phone : 2920570 2520835

BANSI DHAR RAMESH CHAND
VARDHMAN TRADERS
345, BADAM WADI KALBA DEVI, BOMBAY
Phones : 312863, 297112

Daya Chand Uttam Prakash
Arvind Textiles
1st Floor, Katra Lehswan
Chandni Chowk, Delhi-6
Phone : 2513893

Ramesh Chand Pravesh Chand
Daya Chand Jain & Sons
Sunder Sons Fabrics
D. S. Textiles
Katra Lehswan
Chandni Chowk, Delhi-6
Phones : 2510646, 2512256